कहानी: राजा का हरित स्वप्न

कभी कोसी की क्रूरता से कांप उठता था वह गाँव, जहाँ आज हरियाली लहलहा रही है। जहाँ पहले बाढ़ की खबर आती थी, अब वहीं से पर्यावरणीय नवाचारों की चर्चा होती है। यह कहानी है कटिहार जिले के एक छोटे से गाँव भर्री के उस साधारण से लड़के "राजा" की, जिसने अपनी मिट्टी से मोहब्बत को केवल शब्दों में नहीं, कर्मों में जिया। राजा न कोई नेता था, न अमीर, न ही सोशल मीडिया पर वायरल चेहरा—वह तो बस गाँव की मिट्टी में पला एक स्वप्नद्रष्टा युवा था।

गाँव चारों ओर से कोसी नदी की धाराओं से घिरा था, जो बरसात में राक्षसी रूप ले लेती। गाँव वाले हर साल अपने खेत, घर और सपनों को पानी में बहते देखते। राजा जब बच्चा था, तब उसकी दादी कहा करतीं: "बेटा, कोसी माता है, लेकिन जब रूठती है तो गाँव के बच्चों को अनाथ कर देती है।" वह साधारण किसान परिवार में जन्मा था, लेकिन उसकी सोच असा-धारण थी। उसकी दुनिया खेत-खलिहान, मिट्टी और कोसी नदी की लहरों के इर्द-गिर्द घूमती थी। हर बरसात में जब गाँव की गलियाँ पानी में डूब जातीं, लोग अपने घर, अनाज और मवेशी खो बैठते, तब राजा के मन में एक सवाल उठता—क्या हम सिर्फ सहने के लिए पैदा हुए हैं?

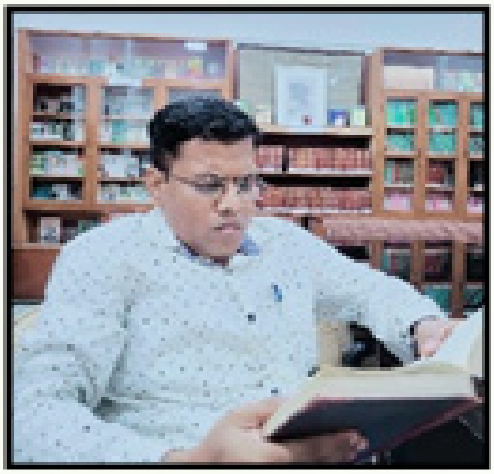

राजा बचपन से होशियार था। उसने स्कूल की पढ़ाई गाँव में पूरी की और फिर पर्यावरण विज्ञान में मास्टर की डिग्री ली। पटना विश्वविद्यालय की डिग्री लेकर वह शहर में नौकरी पा सकता था, लेकिन उसे नौकरी नहीं, ज़मीन से रिश्ते की चाह थी। वह लौटा—अपने गाँव भर्री में। वहाँ, जहाँ हर कोई बाहर निकल जाना चाहता था।

दसवीं के बाद उसने कटिहार डी.एस. कॉलेज में बारहवीं में दाखिला लिया और फिर पटना विश्वविद्यालय से पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की। पर शिक्षा उसके लिए डिग्री नहीं, एक संकल्प थी। उसने खुद से कहा: "मैं कोसी को नहीं बदल सकता, लेकिन कोसी के किनारे बसे भर्री को ज़रूर बदल सकता हूँ।"

शहर में रहकर नौकरी करना उसके लिए आसान था, लेकिन उसने सोचा—"अगर सब पढ़े-लिखे बाहर चले जाएंगे, तो गाँव का क्या होगा?" राजा लौट आया अपने गाँव, बिना किसी सरकारी सहायता के। उसकी जेब में पैसे नहीं थे, लेकिन दिल में जुनून था। उसने लोगों को इकट्ठा करना चाहा, लेकिन किसी को उस पर भरोसा नहीं था। "यह लड़का क्या कर लेगा?"—यह सवाल हर आँख में था। लेकिन राजा ने भरोसा नहीं खोया।

उसने सबसे पहले गाँव के स्कूल के बच्चों को जोड़ना शुरू किया। वह उन्हें लेकर गाँव के चारों ओर वृक्षारोपण करने लगा। उसने बाँस, नीम, पीपल, सहजन जैसे पौधे लगाए, जो मिट्टी को पकड़कर रखने में सक्षम थे और बाढ़ के प्रभाव को कम करते थे। राजा के काम में गाँव के बुज़ुर्ग भी जुड़ने लगे। खेत की मेंड़ें अब पेड़ों से सजने लगीं, बंजर ज़मीनें फूलों से रंगने लगीं।

राजा ने स्थानीय युवाओं को जैविक खेती, वर्षा जल संचयन और सौर ऊर्जा के बारे में जागरूक किया। वह कहता था: "हर गाँव एक जीवित प्राणी है, और हमें उसके अंगों को फिर से जीवित करना है।"

धीरे-धीरे गाँव बदलने लगा। जहाँ पहले कीचड़ था, वहाँ अब फूल खिले थे। हर घर के आगे तुलसी, सहजन और अमरूद के पौधे लगने लगे। गाँव में साइकिल पर चलता राजा अब बच्चों का 'पेड़ वाला भैया' बन चुका था। उसने वर्षा जल संचयन के लिए छोटे-छोटे गड्ढे बनवाए, जिससे पानी ज़मीन में समा जाए और खेतों को जीवन मिलता रहे।

राजा ने महिलाओं को सिखाया कि कैसे रसोई से निकलने वाले कचरे से जैविक खाद बनाई जा सकती है। युवाओं को

‘पर्यावरण मित्र’ के रूप में प्रशिक्षित किया गया और हर वार्ड में एक ‘हरियाली संरक्षक’ नियुक्त किया गया।
धीरे-धीरे राजा की कोशिशें चर्चा में आने लगीं। कुछ वर्षों में भर्री गाँव, जो पहले जिला मुख्यालय तक पहुँचने में झिझकता था, अब खुद एक उदाहरण बन गया। राज्य सरकार के एक अधिकारी ने गाँव का दौरा किया और यह रिपोर्ट सीधे मुख्यमंत्री तक पहुँची।
मुख्यमंत्री ने जब गाँव को देखा—चारों ओर हरियाली, बच्चों का पौधों से संवाद—तो कहा: "राजा, तुमने वह कर दिखाया जो बड़ी योजनाओं से भी नहीं हो पाया। तुम सचमुच बिहार के 'हरित पुरुष' हो।" उसी दिन राजा को "राज्य हरित सम्मान" दिया गया और पूरे बिहार में पर्यावरण मॉडल विकसित करने का कार्यभार सौंपा गया।
पर राजा ने सरकार से कोई निजी लाभ नहीं माँगा। उसने बस आग्रह किया कि हर जिले में ऐसे गाँव बनाए जाएँ, जहाँ मिट्टी को बचाने, जल को रोकने, और पेड़ लगाने का कार्य हो।
राजा ने अलग-अलग जिलों में जाकर गाँवों में 'हरित शिविर' शुरू किए। कई बेरोज़गार युवाओं को प्रशिक्षित कर पर्यावरण सलाहकार बनाया गया। उसने स्थानीय शिल्पकारों को प्रोत्साहित किया, पर्यावरण आधारित पर्यटन की शुरुआत करवाई और महिलाओं को सौर ऊर्जा से उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण भी दिलवाया।
स्वाभाविक था कि आलोचना भी हुई। कुछ लोग कहते—"राजा बस दिखावा करता है, सरकार से फंड खिंचवाना चाहता है।" लेकिन राजा मुस्कुराता और बच्चों के साथ एक नया बाग़ लगाने में जुट जाता।
एक बार उसके मित्र ने पूछा: "इतनी मेहनत के बाद भी लोग तुम्हारी नीयत पर शक करते हैं, कैसा लगता है?" राजा ने जवाब दिया: "अगर पेड़ भी हर पतझड़ में दुखी हो जाए, तो वसंत कभी न आए।"
अब राजा बिहार के विभिन्न जिलों में 'हर गाँव हरित' अभियान चला रहा है। लेकिन उसकी सुबह अब भी भर्री में ही होती है, जहाँ वह अपने लगाए नीम के पेड़ को प्रणाम कर दिन की शुरुआत करता है।
लोग कहते हैं—"राजा ने सिर्फ पेड़ नहीं लगाए, उसने गाँव के आत्मसम्मान को फिर से जीवित किया है।"
राजा को कोई बड़ा पुरस्कार चाहिए भी नहीं था। उसके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार यह था कि उसका गाँव अब हरियाली से पहचाना जाता है, और कोसी की त्रासदी अब उसकी पहचान नहीं रही।
आज भर्री गाँव एक प्रेरणा है। स्कूलों के पाठ्यक्रम में राजा के प्रयासों को पढ़ाया जाता है। बच्चे जब पौधों से बात करते हैं, तो वे राजा के किस्से सुनाते हैं। राजा अब भी सुबह उठकर सबसे पहले पेड़ों को पानी देता है। वह कहता है: "मैंने कोई क्रांति नहीं की, मैंने बस अपनी धरती से प्यार किया। और जब आप अपनी मिट्टी से मोहब्बत करते हैं, तो मिट्टी आपको वरदान बना देती है।"
राजा की कहानी हमें यह सिखाती है कि बड़े बदलावों के लिए बड़ी कुर्सियों की नहीं, बस एक सच्चे इरादे की ज़रूरत होती है। यदि एक अकेला युवक अपनी मिट्टी को बचा सकता है, तो हम सब मिलकर इस देश को हरा-भरा बना सकते हैं।
“हरित प्रदेश” राजा का नहीं, हर उस व्यक्ति का सपना है जो धरती को माँ समझता है। आइए हम सभी राजा के इस पुनीत कर्तव्य में साथ देकर पूरे भारत को हरा-भरा और सुंदर बनाएँ।

- शशि धर कुमार, कटिहार, बिहार